Summary

प्रबंध की संक्षिप्त रूपरेखा

भूमिका : गुजरात की ज्ञानमार्गी परंपरा का संक्षिप्त परिचय – १६

अखा के : अ : पुरोगामी संत : नरसिंह, भीम, मांडण, समर्थदास, मीराँ

: आ: समकालीन संत : दादू दयाल, संत माधवदास, धनराज, रामभक्त, नरहरि, भगवानदास कायस्थ, गोपाल, अखो

और : इ : परवर्ती संत : भाणदास, ~~माधवदास~~ नाथभवान, प्रीतम, धीरो, निरांत, बापुसाहब गायकवाड, भोजो भगत, छोटम, अर्जुन-भगत और सागर ।

प्रथम अध्याय : अखा का जीवन-वृत १

उपलब्ध बहि:साक्ष्य एवं अंत:साक्ष्य के आधार पर संत अखा के जन्म-निधन, नाम-जाति और व्यवसाय, पूर्वज और माता-पिता, भ्राता-भगिनि, पारिवारिक जीवन, वैराग्य और गृहत्याग, पर्यटन एवं यात्रामार्ग, गुरु, अध्ययन, शिष्यपरंपरा, स्वभाव, उपदेश और विरोध आदि का विवेचन, जीवनवृत संबंधी निष्कर्ष ।

द्वितीय अध्याय : समकालीन परिस्थितियाँ ७८

अ. राजनैतिक परिस्थिति: अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ की व्यवस्था और स्थिरता का समय ।

आ. आर्थिक परिस्थिति : व्यापार की दृष्टि से अत्यंत समृद्धि का युग

इ. शिल्प स्थापत्य के वैभव की पराकाष्ठा ।

ई. साहित्य: गद्य, पद्य एवं अन्य रूपों, शैलियों, वृतों एवं भाषा का विकास ।

उ. सामाजिक परिस्थिति – रूढ़ियाँ, वर्णाश्रम-भेद, सती प्रथा, बाल विवाह आदि, ~~निरूपण~~ का परीक्षण एवं निष्कर्ष ।

तृतीय अध्याय : रचनायें और उनका क्रम – १२३

उपलब्ध – अनुपलब्ध, प्रकाशित – अप्रकाशित तथा प्रबंध एवं मुक्तक समस्त रचनाओं का संक्षिप्त परिचय, रचनाक्रम निर्धारण का आधार, " संतनां लक्षणो ", " अवस्था निरूपण ", " पंचीकरण ", " गुरु-शिष्य संवाद ", " चित्तविचारसंवाद ", " अनुभवबिंदु ", " संतप्रिया ", " ब्रह्मलीला ", " अखेगीता ", आदि का रचनाक्रम निर्धारण, कतिपय रचनाओं के विषय में प्रचलित मतों का परीक्षण एवं निष्कर्ष ।

चतुर्थ अध्याय – हिन्दी रचनाओं का परिचय १६८

:अ: मुक्तक कृतियाँ; अमृतकला रमेणी, एकलक्ष रमेणी, कुंडलिया, झूलना, पद, जकड़ी, भजन तथा साखियाँ ।

:आ: प्रबंध कृतियाँ : संतप्रिया, ब्रह्मलीला, आदि की परंपरा, मौलिकता एवं अन्य विशेषतायें, निष्कर्ष ।

पंचम अध्याय :: अखा की दार्शनिक विचार धारा २२८

ब्रह्म निरूपण, जीवनिरूपण, वेदांत एवं सांख्य के आधार पर जगत-निरूपण, जीव, जगत एवं ब्रह्म का संबंध, मन और माया में अभेद मनोदृश्यमिदं-सर्वं, मनोनाश, मनोनाश के उपाय, स्वानुभव, निष्कर्ष ।

षष्ठ अध्याय : अखा की अध्यात्मभावना २५६

अ. अध्यात्म साधना का रचनात्मक पक्ष; आत्मानुभूति, अध्यात्म मार्ग में प्रेम, भक्ति, विरह, अहंत्याग, नम्रता, ज्ञान, सुरति-निरति, उलटी चाल, सदगुरु आदि का महत्व, गुरु गोविंद में अद्वैत की स्थापना, संत अखा की जीवन्मुक्त दशा का वर्णन, सहज साधना का निरूपण, निष्कर्ष ।

ब. अध्यात्म साधना का ध्वंसात्मक पक्ष; लोकमंगल की भावना, बाह्याचारों का खोखलापन, धर्माचार्यों के दंभ, पाखंड एवं विलासपूर्ण जीवन की कटु भर्त्सना; मंत्र-तंत्र, वेशभूषा, वर्णाश्रम, मूर्तिपूजा, तिथि व्रत आदि की निस्सारता, सदाचार, सत्संगति, समदृष्टि आदि की उपादेयता का आदेश एवं निरूपण ।

सप्तम अध्याय : अखा की भाषा ... ३०२

अ. भाषा वैज्ञानिक अध्ययन, स्वर और अखा के प्रयोग, व्यंजन और अखा के प्रयोग ।

आ. व्याकरणिक अध्ययन में संज्ञा, सर्वनाम, लिंग, वचन, अव्यय, विशेषण, क्रिया के विभिन्न भेदों का विवेचन ।

इ. शब्द समूहों का तत्सम, अर्ध तत्सम, तद्भव, विदेशी, समसामयिक भाषाओं के शब्द- गुजराती, राजस्थानी, पंजाबी एवं देशज, के विभिन्न विभागों में वर्गीकरण ।

ई. अखा की भाषा में मुहावरों और कहावतों का प्रयोग, हिन्दी और गुजराती कहावतों का तुलनात्मक अध्ययन ।

उ. अखा की भाषा की अभिव्यंजना शक्ति - उपयुक्त वर्ण विन्यास, समुचित शब्द-विधान, भावग्राह्यता, सहजता ।

अष्टम अध्याय : रस, अलंकार और छंद - ३४१

अखा काव्य में " अद्भुतरस ", अन्य रसों में शांत, मधुर, अद्भुत, वात्सल्य तथा विप्रलंभ शृंगार आदि रसों के उदाहरण; काव्य में अलंकारों का स्थान, शब्दगत एवं अर्थगत अलंकार, अखा का अलंकार विधान - सादृश्यमूलक एवं विरोधमूलक; अखा का छंदोविधान- मनहरण कवित, दोहा, गीतिका, सवैया, मत्तगयंद आदि शास्त्रीय एवं साखी, शब्दरमणी आदि सघुक्कड़ी छंदो का उपयोग ।

उपसंहार : ३७८

प्रतिनिधित्व एवं महानता का निरूपण ।

परिशिष्ट १ : ३७२

अ, आ, इ, में अप्रकाशित हिन्दी रचनायें ।

परिशिष्ट २ : ३८२

अ, आ, इ, ई. में अप्रकाशित गुजराती रचनायें ।

परिशिष्ट :३ : ३९४

संगीत और संत अखा ।

संदर्भ ग्रंथ सूचि :

अ. हिन्दी :

आ. गुजराती :

इ. अंग्रेजी

ई. हस्तलिखित ग्रंथ

उ. पत्र-पत्रिकायें